62

भाग 3 (14:1–15:13):

सही होने से भी बढ़कर

हमने पहले ही देखा है कि रोमियों 14 के नियम लोगों को किसी भी समय असहमत होने पर सहायता कर सकते हैं। एवर्ट हाफर्ड विवाह में अकेले चलने वाले दम्पत्तियों से बात करते समय इसी वचन का इस्तेमाल करते हैं। इस अध्याय से बनाया जाने वाला उनका नियम यह है: ''यदि आप सही हैं तौ भी बहस में हार जाना कोई बात नहीं है।''[1] हम में से कइयों को यह बात अजीब लग सकती है। हम *सही* होना चाहते हैं। अमेरिकी राजनेता हैनरी क्ले (1777–1852) यह कहने के लिए प्रसिद्ध था, ''मैं राष्ट्रपति होने से सही होना बेहतर जानता हूं।''[2] सही *होने* से महत्वपूर्ण यह है कि हम अपने साथ असहमत होने वाले किसी भी व्यक्ति से *मनवाना* चाहते हैं कि हम सही हैं।

रोमियों 14 की पौलुस की चर्चा पहली सदी की कलीसिया में मांस खाने के विवाद के गिर्द ही घूमती थी। उसने इस बात में कोई संदेह नहीं रहने दिया कि इस मुद्दे पर कौन सही है। उसने कहा, कि जो व्यक्ति ''साग-पात ही खाता है'' वह ''निर्बल'' भाई है (14:2)।[3] उसने कहा कि ''कोई वस्तु [कोई भी खाना, मांस सहित] अपने आप से अशुद्ध नहीं है'' (14:14) और इसे ''मज़बूत'' स्थिति के रूप में पेश किया (देखें 15:1)। तौ भी पौलुस ने यह स्पष्ट कर दिया कि उस मुद्दे पर सही होने से अधिक आवश्यक बातें भी हैं।

सही होने से अधिक आवश्यक क्या हो सकता है? रोमियों 14:13–23 में पौलुस ने अधिक महत्व की कई बातें बताईं।[4] 13 से 18 आयतों में पौलुस ने ज़ोर दिया कि विचार के मामलों में सही होने से आवश्यक *किसी भाई को हानि न पहुंचाना* है (आयतें 13, 15)। इस पाठ में हम 19 से 23 आयतों का अध्ययन करेंगे। यह वचन साथी मसीही लोगों को हानि न पहुंचाने की आवश्यकता को रेखांकित करता रहेगा, परन्तु एक अतिरिक्त विचार भी बताया जाएगा। कुछ न करके, या उसे अकेला छोड़कर, हम किसी भाई को हानि न पहुंचाने की पौलुस की बात को मान सकते हैं। इस पाठ के लिए वचन सकारात्मक ज़ोर देने को शामिल करने अर्थात कुछ *करने* की आवश्यकता से आगे ले जाता है। एक अर्थ में पौलुस ने कहा कि ''सही होने से बढ़कर *किसी भाई की सहायता* करना अधिक आवश्यक है'' (देखें आयत 19)। इन आयतों में आगे बढ़ते हुए हम कई विभिन्नताएं देखेंगे।

बनाना बनाम बिगाड़ना (14:19, 20क)

बनाना

हमारा वचन पाठ ''इसलिए'' शब्दों से आरम्भ होता है। ''इसलिए'' यूनानी शब्द *oun* से लिया गया है, जिसका अनुवाद 13 और 16 आयतों में ''अत:'' किया गया है। अपने विचार को बढ़ाते हुए पौलुस ने ज़ोर दिया कि हमारा लक्ष्य यह होना चाहिए: ''इसलिए हम उन बातों का प्रयत्न करें, जिनसे मेल-मिलाप और एक-दूसरे का सुधार हो'' (आयत 19)। ''प्रयत्न करें''

(*dioko* से) सक्रिय शब्द है। AB में है ''सो आओ फिर निश्चित रूप से लक्ष्य बनाएं और उत्सुकता से उसे पूरा करने के लिए काम करें। ...''

हमें उत्सुकता से क्या काम करना चाहिए? पहले तो, ''उन बातों में लगे रहें जिनसे मेल मिलाप हो।'' कुछ बातों से शत्रुता बढ़ती है और कुछ बातों से मेल बढ़ता है। अपनी मर्ज़ी मनवाने पर ज़ोर देने से झगड़ा बढ़ता है, जबकि दीन मन होना शान्ति को बढ़ावा देता है (देखें याकूब 3:17)। स्वार्थ का अत्यधिक ध्यान होना झगड़ा बढ़ाता है, जबकि दूसरों की चिन्ता करना मेल बढ़ाता है (देखें फिलिप्पियों 2:4)। बहस जीतने की कोशिश करना नाराज़गी बढ़ाता है जबकि दूसरे व्यक्ति को समझने की कोशिश करना शान्ति बनाता है (देखें नीतिवचन 15:1)।[5]

दूसरा, हमें ''एक-दूसरे का सुधार'' करने की कोशिश करनी है। ''सुधार'' शब्द यूनानी के *oikodome* से लिया गया है।[6] इस शब्द का मूल अर्थ ''घर बनाना'' या ''कोई और सुधार है'' (oikos [''घर''] के साथ *demo* [''बनाना'']।[7] नये नियम में इस शब्द का इस्तेमाल सांकेतिक रूप में दूसरों को आत्मिक रूप से बनाने और मज़बूत करने के लिए किया गया है। कलीसिया को इसकी आवश्यकता कैसे है! कहीं और पौलुस ने कहा है, ''सब कुछ आत्मिक उन्नति के लिए होना चाहिए'' (1 कुरिन्थियों 14:26; देखें 1 कुरिन्थियों 8:1)।

''एक-दूसरे का सुधार'' में ''एक-दूसरे'' वाक्यांश को नज़रअन्दाज़ न करें। जिस बात का पौलुस प्रस्ताव रख रहा था, उससे ''निर्बल'' भाई *और* ''बलवान'' भाई *दोनों* को सहायता मिलनी थी। ज्ञान में बढ़ने पर ''निर्बल'' भाई का पालन-पोषण और रक्षा होनी आवश्यक थी। परन्तु ''बलवान'' भाई को भी बढ़ने की आवश्यकता थी; उसे *प्रेम* में बढ़ने की आवश्यकता थी।

जिम्मी एलन रोमियों 14:19 को ''पूरे भाग की मुख्य आयत'' मानता है।[8] 14:13-18 के अपने अध्ययन में मैंने कई प्रश्न शामिल किए हैं, जो दूसरे मसीही लोगों के साथ अपने सम्बन्ध के बारे में अपने आप से पूछने चाहिए। इस सूची में दो प्रश्न ये हैं: ''क्या मेरे कामों से मेरे भाई का *सुधार* होगा?'' और ''क्या उनसे कलीसिया का *सुधार* होगा?'' (देखें इफिसियों 4:12ख)।

बिगाड़ना

बनाना का विपरीत शब्द बिगाड़ना है। आयत 20 में पौलुस ने सुधार के अपने रूपक को जारी रखा: ''भोजन के लिए परमेश्वर का काम न बिगाड़[9]'' (आयत 20क)। ''बिगाड़'' का अनुवाद *kataluo* से किया गया है, जिसमें *kata* से गहरा हो जाने वाला शब्द *luo* (''खोलना, घोलना, तोड़ना, नष्ट करना'') है। *Kataluo* का अर्थ ''पूरी तरह नष्ट करना, बिल्कुल बर्बाद करना''[10] है।

हमें क्या नहीं बिगाड़ना चाहिए? ''परमेश्वर के काम को।'' इस वाक्यांश में वह सब हो सकता है, जो परमेश्वर ने मनुष्यजाति के उद्धार के लिए किया है। संदर्भ में इसका हवाला उस काम के परिणाम के अन्त तक[11] अर्थात मसीह में भाइयों और बहनों के लिए है। पौलुस के शब्द यह दिखाने के लिए बनाए गए थे कि विचार के मामलों पर झगड़ना कितना बेतुका और त्रासदीपूर्ण है। जे. बी. फिलिप्स ने आयत 20 के पहले भाग को इस प्रकार लिखा है: ''निश्चय ही हमें मांस की एक प्लेट के लिए परमेश्वर के काम को बिगाड़ने की इच्छा नहीं करनी चाहिए!''

यह ताड़ना पढ़ते हुए कि ''भोजन के लिए परमेश्वर के काम को न बिगाड़'' मुझे कुछ लोगों

का ध्यान आता है जिन्होंने पहली सदी के मांस खाने के मुद्दे की तरह विचार की भिन्नताओं, दिल दुखाने, काल्पनिक उपेक्षाओं और ऐसे छोटे-छोटे महत्वहीन मामलों को ''मुद्दे'' बना कर मण्डलियों को बिगाड़ दिया। कितना दुखद है!

बनाने के बजाय बिगाड़ना हमेशा आसान रहा है। किसी बच्चे को हथौड़ा देकर उसे कहा जाए कि घर को तोड़ दे तो वह मिनटों में बहुत-सा नुकसान कर सकता है। उसे हथौड़ा देकर कहो कि वह घर बना दे, तो वह चाहे जितना समय लगाए उसे बना नहीं सकता। कलीसिया में बहुत से लोग ऐसे हैं, जिनका काम एकमात्र ''तोड़े'' लोगों की गलतियां निकालना और काम को बिगाड़ना होता है। परमेश्वर की सहायता से बनाने वाले बनने का निश्चय करें।

भलाई करना बनाम बुराई करना (14:20ख, ग, 21)

भजन लिखने वाले ने लिखा है: ''बुराई को छोड़ और भलाई कर'' (भजन संहिता 34:14क; देखें 1 पतरस 3:11)। हमारे वचन पाठ के अगले भाग में पौलुस ने किसी भाई को दुखी न करने के महत्व पर ज़ोर देने के लिए ''भलाई'' और ''बुराई'' शब्दों पर ज़ोर दिया।

वह जो बुरा है

14:14 में पौलुस ने कहा कि ''कोई वस्तु अपने आप से अशुद्ध नहीं।'' यहां उसने वैसा ही दावा किया: ''सब कुछ शुद्ध [*katharos*] तो है'' (आयत 20क)। पिछले वाक्य की तरह इसमें भी कोई खूबी होनी[12] थी। पहले पौलुस ने ''अशुद्धता'' (*akathartos*, ''गंदगी'') (1:24; 6:19) की बात की थी, सो वह नहीं मानता था कि कोई भी चीज़ और हर चीज़ ''शुद्ध'' है। इस चर्चा में विशेष रूप से उसके मन में मांस की बात थी कि अपने आप में हर प्रकार का मांस ''वास्तव में शुद्ध है।'' (NIV में ''हर भोजन शुद्ध है'' है।)

''परन्तु,'' पौलुस ने आगे कहा, ''उस [विभिन्न प्रकार के मांस] मनुष्य के लिए बुरा है [*kakos*], जिस को उसके भोजन करने से ठोकर लगती है[13]'' (14:20ग)। मूल धर्म शास्त्र में इस ''मनुष्य'' की पहचान अस्पष्ट है। मूलतया यूनानी शब्द का अर्थ ''ठोकर लगने के द्वारा खाने वाला आदमी'' है। यह शब्दावली किसी ''निर्बल'' भाई के विषय में हो सकती है, जिसका विवेक मांस खाने से ठोकर खाता है (देखें आयत 23)। अगली आयत के प्रकाश में ये शब्द सम्भवतया ''बलवान'' भाई के लिए हैं, जो ''निर्बल'' भाई के सामने मांस खाता है और उसके विवेक को भंग करने के लिए उसे प्रोत्साहित करता है। ह्यूगो मेकोर्ड के अनुवाद में है ''वह व्यक्ति जो वह चीज़ खाता है, जिससे किसी को ठोकर लगती है।''

वह जो भला है

यदि वह ''बुरा'' है तो ''भला'' क्या है? पौलुस ने इस प्रश्न का उत्तर दिया: ''भला तो यह है, कि तू न मांस खाए और न दाख रस पीए,[14] न और कुछ ऐसा करे, जिस से तेरा भाई ठोकर खाए'' (आयत 21)।

आयत 17 में पौलुस ने कहा कि ''परमेश्वर का राज्य खाना/*पीना* नहीं,'' जिसमें उसने इस चर्चा में ''दाखरस'' पीने की बात जोड़ी। इसे जोड़ने की पौलुस ने कोई व्याख्या नहीं दी, इसलिए

हम पक्का नहीं जान सकते कि उसके मन में क्या था। शायद यह केवल इसलिए जोड़ा गया कि खाना और पीना भोजन के तत्व हैं। पौलुस कह रहा होगा, ''अपने भाई को हानि पहुंचाने के बजाय मैं उपवास रखना पसन्द करूंगा!'' यदि प्रेरित ने यह चाहा होता कि ''दाख रस'' शब्द को महत्व दिया जाए, तो शायद यह इसलिए था क्योंकि दाखरस किसी न किसी तरह मूर्तियों की पूजा से जुड़ा था।[15] पुराने नियम में दानिय्येल ने राजा की मेज़ से दाखरस और भोजन दोनों लेने से इनकार कर दिया था (दानिय्येल 1:8)। शायद उसने ऐसा इसलिए किया क्योंकि भोजन, अर्थात खाना और पीना बाबुल के देवताओं को अर्पित किया गया (भोजन के लिए परमेश्वर को हमारे धन्यवाद देने की तरह, मूर्तियों को लगाया गया भोग) था।[16]

परन्तु हमें इस बात पर ध्यान रखना चाहिए कि हम अतिरिक्त मुद्दे में फंसकर कहीं पौलुस की मुख्य बात के प्रति बेपरवाह न हो जाएं। उसने कहा, ''भला तो यह है, कि तू न ... *कुछ ऐसा* करे, जिससे तेरा भाई ठोकर खाए।'' 1 कुरिन्थियों 8:13 में पौलुस ने कहा, ''यदि भोजन मेरे भाई को ठोकर खिलाए, *तो मैं कभी किसी रीति से मांस न खाऊंगा,* न हो कि मैं अपने भाई के लिए ठोकर का कारण बनूं।'' कुछ लोगों को यह वाक्य अति लगता है। वे आपत्ति करते हैं कि उन्हें यह या वह करने का ''अधिकार है।'' एक अर्थ में पौलुस ने सिखाया, ''अपने भाई की सहायता करने के लिए अपने अधिकार को त्यागना आपका अधिकार है।''[17]

धन्य होना बनाम श्रापित होना (14:22, 23)

धन्य होना

22 और 23 आयतों में पौलुस ने ''बलवान'' भाई को समझाना जारी रखा। उसने उस भाई से इस तथ्य को प्रचारित न करने के लिए कहा कि वह मानता है कि मांस खाना परमेश्वर को स्वीकार्य है: ''तेरा जो विश्वास हो, उसे परमेश्वर के सामने अपने ही मन में रख[18]'' (आयत 22क)। ''विश्वास'' यहां ''बलवान'' भाई के व्यक्तिगत विश्वास को कहा गया है कि मांस खाने में कोई बुराई नहीं है। CEV में आयत 22 के पहले भाग को इस प्रकार व्यक्त किया गया है: ''इन बातों के विषय में तेरा जो भी विश्वास है, उसे तेरे और परमेश्वर के बीच रखा जाना चाहिए।'' क्या पौलुस यह सुझाव दे रहा था कि मसीही लोग धूर्त और धोखेबाज होने चाहिए? बिल्कुल नहीं। वह तो केवल उन्हें यह समझाने की कोशिश कर रहा था कि यदि उनके विचार व्यक्त करने से किसी साथी मसीही को हानि होती है तो अच्छा यही है कि वे अपने विचार अपने तक ही रखे।

फिर पौलुस ने आगे कहा, ''धन्य है वह, जो उस बात में जिसे वह ठीक समझता है, अपने आप को दोषी नहीं ठहराता'' (आयत 22ख)। ''जिसे वह ठीक समझता है'' का अर्थ मांस खाने के सम्बन्ध में है। यदि ''बलवान'' भाई किसी ''निर्बल'' भाई को मांस खाने या उस विषय पर अपने विचार व्यक्त करने के द्वारा दुखी करता है, तो उसके कार्य उसे दोषी ठहराएंगे। परन्तु यदि वह अपना विचार अपने तक रखे, तो वह ''धन्य'' होगा।[19] ''धन्य'' का अनुवाद *makarios* से किया गया है, जिसका इस्तेमाल मत्ती 5:3–11 और अन्य आयतों में भी मिलता है। लियोन मौरिस ने लिखा है कि '' 'happy' में धार्मिक संतुष्टि की कमी मिलती है यानी यह केवल भावनात्मक नहीं, बल्कि परमेश्वर की आशीष की बात है।''[20] परमेश्वर अपनी आशिषें उन लोगों पर बरसाता

है, जो खुद के बजाय मसीह में अपने भाइयों और बहनों की अधिक चिन्ता करते हैं।

दोषी होना

यह हमें उस आयत पर ले आता है, जिसका उल्लेख रोमियों 14 की हमारी चर्चा में पहले कई बार हुआ है: ''परन्तु जो संदेह कर [कि मांस खाने में कोई बुराई नहीं है] के खाता है, वह दण्ड के योग्य ठहर चुका; क्योंकि वह निश्चय धारणा से [मांस] नहीं खाता, और जो कुछ विश्वास से नहीं, वह पाप है'' (आयत 23)। अध्याय 14 में एक और जगह की तरह ''विश्वास'' यहां व्यक्तिगत विश्वास को कहा गया है। मेकोर्ड ने आयत 23 का अनुवाद इस प्रकार किया: ''संदेह करने वाला यदि खाता है, तो वह दोषी है क्योंकि *उसमें* विश्वास की कमी है; और कोई भी बात जो *विश्वास* से नहीं है पाप है।'' इस बात पर कि अपने विवेक की बात मानना कितना आवश्यक है। बाइबल का यह मुख्य वाक्य है। फिलिप्स ने इसका इस प्रकार अनुवाद किया है, ''यदि कोई व्यक्ति मांस के विषय में परेशान विवेक के साथ खाता है, तो पक्का जान लें कि वह गलत कर रहा है। ... जब हम अपने विश्वास से हटकर काम करते हैं तो हम पाप कर रहे होते हैं।''

आयत 23 में पौलुस ने कठोर भाषा का इस्तेमाल किया: ''जो संदेह करके खाता है, वह *दण्ड के योग्य* ठहर चुका; क्योंकि ... जो कुछ विश्वास से नहीं, वह *पाप* है।'' कुछ लोग यह कहकर कि उसे उसका विश्वास दोषी ठहराता है, न कि परमेश्वर, इस भाषा को नरम करने की कोशिश करते हैं; परन्तु आयत का आरम्भ ''परन्तु'' (*de*) के साथ होता है, जो इसे पिछली आयत के साथ जोड़ता है। पौलुस आयत 22 में परमेश्वर से आशीषित होने और आयत 23 में परमेश्वर द्वारा दण्डित होने में अन्तर कर रहा था।

शायद मुझे फिर से ज़ोर देना चाहिए कि पौलुस यह प्रस्ताव नहीं दे रहा था कि धार्मिक मामलों में ''अपने विवेक की मानो।'' हमारा धार्मिक अधिकार हमारा विवेक नहीं, बल्कि परमेश्वर का वचन है। विवेक केवल इस हद तक सुरक्षित अगुआ है कि इसे परमेश्वर की सच्चाई के द्वारा अगुआई मिलती है। वर्षों से बहुत से लोगों ने स्पष्ट विवेक के साथ परमेश्वर की आज्ञा तोड़ी है (देखें प्रेरितों 8:3; 23:1)। तौ भी यहां तक विवेक हमारा ''अगुआ'' है। यानी हमें अपने विवेक की बात नहीं टालनी चाहिए। मेरे भाई कोय ने इसे इस प्रकार लिखा है: ''विवेक ... गलत बात को सही नहीं कर सकता है, परन्तु यह सही बात को गलत कर सकता है।''[21]

इस सच्चाई को इससे अधिक बढ़ाया नहीं जा सकता कि अपने विवेक के विपरीत काम *न* करें। जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट ने यह विचार जोड़ा: ''अपने विवेक के विरुद्ध न जाने के इस स्पष्ट निर्देश के अनुसार इसे सिखाने की स्पष्ट आवश्यकता भी है।''[22] फिर से सिखाए जाने के समय, हमें वह हर काम नहीं करना चाहिए, जिसे विवेक कहता है कि गलत है। एक पुरानी कहावत है, ''यदि संदेह हो जाए, तो न करो।'' यह कहावत विशेष रूप से विवेक पर लागू होती है। यदि आपको *संदेह* है कि कोई बात करनी सही है या नहीं, तो उसे *न करें*।

आयत 23 को छोड़ने से पहले एक याद दिलाने वाली बात है कि चाहे इन आयतों में हम में से हर किसी के लिए संदेश है, परन्तु पौलुस ने विशेष रूप से ''बलवान'' भाइयों के नाम लिखा है। वह ''बलवान'' लोगों से ऐसा कुछ न करने के लिए कह रहा था, जिससे अपने विवेक की बात

न मानकर और बदले में दोषी ठहरकर ''निर्बल'' भाई को पाप करने की प्रेरणा मिले। यह सही होने से कहीं अधिक आवश्यक था।

सारांश

सही होना *विश्वास* के मामलों में व्यापक महत्व रखता है। जिम्मी एलन ने लिखा है, ''ऐसे मामले हैं, जिनमें हम खामोश रहकर समझौता नहीं कर सकते। यीशु और प्रेरितों के [जीवन] तर्क से भरे हुए थे। हमें विश्वास के लिए सच्चे मन से प्रयत्न करना आवश्यक है'' (यहूदा 3)।[23] झूठी शिक्षा देने वालों के विषय में पौलुस ने कहा, ''उन के आधीन होना हम ने एक घड़ी भर न माना ...'' (गलातियों 2:5क)।

परन्तु *विचार* के मामलों में कुछ बातें सही होने से अधिक महत्वपूर्ण हैं। यह ध्यान रखना कि किसी भाई को *दुख न लगे* सही होने से अधिक आवश्यक है। किसी भाई की *सहायता* करने की कोशिश करते रहना सही होने से कहीं आवश्यक है। अपने से बढ़कर अपने भाइयों के प्रति अधिक चिन्तित होने में परमेश्वर हम सब की सहायता करे।

प्रचारकों तथा सिखाने वालों के लिए नोट्स

इस प्रस्तुति के लिए एक वैकल्पिक शीर्षक है ''बनाना या बिगाड़ना?''

रोमियों के नाम पौलुस का पत्र कहां समाप्त करने पर एक छोटा सा वचन से जुड़ा प्रश्न खड़ा होता है क्योंकि कुछ प्राचीन हस्तलेख अध्याय 14 के साथ खत्म हो जाते हैं। मैंने रोमियों की पुस्तक पर अपनी शृंखला के आरम्भिक पाठ में वचन से जुड़ी इस समस्या का संक्षेप में उल्लेख किया था। विद्वान आमतौर पर इस बात से सहमत हैं कि नये नियम में जो हमारे पास सोलह अध्याय हैं वे ''आंशिक तौर पर रोम के मसीही लोगों के नाम पौलुस का वचन है।''[24] बर्टन कॉफ़मैन ने लिखा है कि ''अगले अध्याय की आयत 1 विचार में बिना रुकावट के जारी रहती है और इस अध्याय के विचार की ऐसी तर्कसंगत निरन्तरता है कि यह मान लेने वाला सही ठहरता है कि पौलुस का सांस इन दोनों के बीच में कभी नहीं रुका।''[25]

टिप्पणियां

[1]ईस्ट साइड चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, मिडवेस्ट सिटी, ओक्लाहोमा, 25 अप्रैल 2004 को पढ़ाई गई क्लास में, एवरट हफर्ड ''लाइफ मच्योरिटी एंड द फैमिली।'' [2]हैनरी क्ले, सीनेट में भाषण (1850); जॉन बार्टलेट *बार्टलेट'स फैमिलियर कोटेशंस,* 16वां संस्क., संपा. जस्टिन कैप्लन (बोस्टन: लिटल, ब्राउन, एंड कं., 1992), 389 में उद्धृत। [3]याद रखें कि हम *खाने* की प्राथमिकता के रूप में ''केवल साग-पात'' खाने की बात नहीं कर रहे हैं। [4]यह न भूलें कि विचाराधीन *विचार* के मामले हैं। निश्चय ही *विश्वास* के मामलों पर सही होना अत्यधिक आवश्यक है। [5]आवश्यकता के अनुसार इस वचन को बदल लें। यदि आप इस पाठ का इस्तेमाल क्लास के रूप में करते हैं, तो चर्चा के लिए अच्छा प्रश्न होगा ''कुछ 'मेल कराने वाली बातें' कौन सही *हैं*?'' [6]15:2 में *oikodome* का अनुवाद ''उन्नति'' हुआ है। [7]डब्ल्यू. ई. वाइन, मैरिल एफ़ अंगर, एंड विलियम व्हाइट, जूनि., *वाइन'स कम्पलीट एक्पोज़िस्टरी डिक्शनरी ऑफ़ ओल्ड एंड न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स* (नैशविल्ले: थॉमस नेल्सन पब्लिशर्स, 1985), 194. [8]जिम्मी एलन, *रोमन्स, दि क्लीयरेस्ट गॉस्पल ऑफ़ ऑल* (सरसी, आरकैंसा: लेखक द्वारा, 2005), 288. [9]यूनानी धर्मशास्त्र में ''भोजन के लिए'' वाक्यांश में ज़ोर देने

के लिए वाक्य के आरम्भ में रखा गया है। [10]वाइन, 164.

[11]पौलुस का फोकस इस पर था कि जो कुछ हम करते हैं उससे हमारे साथी मसीही प्रभावित होते हैं: ''हमें एक दूसरे'' को बनाना है (आयत 19); हमें ''उसका नाश'' नहीं करना है ''जिसके लिए मसीह मरा'' (आयत 15)। [12]इस पुस्तक में पहले आए पााठ '' 'जिसके लिए मसीह मरा' (14:13-18)'' पाठ में 14:14 पर टिप्पणियों पर विचार करें। [13]''ठोकर'' शब्द *proskomma* से लिया गया है। 14:13ख की चर्चा में इस शब्द पर नोट्स देखें। [14]इस आयत में ''दाखरस'' के लिए सामान्य शब्द *oinos* है। उस ज़माने में आमतौर पर मेज़ पर पानी मिला दाखरस होता था। कुछ लोग अनुमान लगाते हैं कि इसका कारण यह था कि शुद्ध पानी हर जगह नहीं होता था। जिम्म मैक्गुइगन, *दि बुक ऑफ़ रोमन्स,* लुकिंग इन टू द बाइबल सीरीज़ (लब्बॉक, टैक्सस: मोंटैक्स पब्लिशिंग कं., 1982), 485-94 में *oinos* पर एक पृष्ठ दिया गया है। [15]लियोन मौरिस, *दि एपिस्टल टू द रोमन्स* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 491. [16]सी. एफ. केल, *बिब्लिकल कमैंट्री ऑन द बुक ऑफ़ डेनियल,* कमैंट्रीज़ ऑन द ओल्ड टैस्टामेंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1949) 80. [17]रिचर्ड रोजर्स, *पेड इन फुल: ए कमैंट्री ऑन रोमन्स* (लब्बॉक, टैक्सस: सनसैट इंस्टीट्यूट प्रैस, 2002), 192 से लिया गया। [18]''तेरा जो विश्वास हो'' के बजाय यूनानी में इसका सरल अर्थ है ''अपने तक रख।'' [19]कइयों का मानना है कि रोमियों 14:22 के अन्तिम भाग की व्याख्या इस प्रकार होनी चाहिए: ''धन्य है वह जो अपने विवेक के अनुसार रहता है।'' [20]मौरिस, 492.

[21]कोय रोपर, ''हाऊ क्रिश्चियंस कैन डिसएग्री विदाउट द चर्च डिसइंटेग्रेटिंग,'' *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* (जून 1989): 39. [22]जॉन आर. डब्ल्यू. स्टॉट, *दि मैसेज ऑफ़ रोमन्स: गॉड'स गुड न्यूज़ फ़ॉर द वर्ल्ड,* दि बाइबल स्पीक्स टुडे सीरीज़ (डाउनर्स ग्रोव, इलिनोइस: इंटर-वर्सिटी प्रैस, 1994), 368. क्योंकि हर बार हर मुद्दे पर यह स्पष्ट नहीं होता कि कौन ''बलवान'' है और कौन ''निर्बल'' इसलिए हम में से हर एक को अपने विश्वास को परमेश्वर के वचन से मिलाना चाहिए और उस विश्वास को परमेश्वर की इच्छा के निकट लाने की कोशिश करनी चाहिए। [23]एलन, 289. [24]डग्लस जे. मू, *रोमन्स,* दि NIV एप्लीकेशन कमैंट्री (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 2000), 19. [25]जेम्स बर्टन कॉफ़मैन, *कमैंट्री ऑन रोमन्स* (ऑस्टिन, टैक्सस: फर्म फाउंडेशन पब्लिशिंग हाउस, 1973), 482.